Date –04- June 2025

FPI और 2025 का भारतीय IPO : बाजार के विश्वास की परीक्षा का नया अध्याय

खबरों में क्यों?

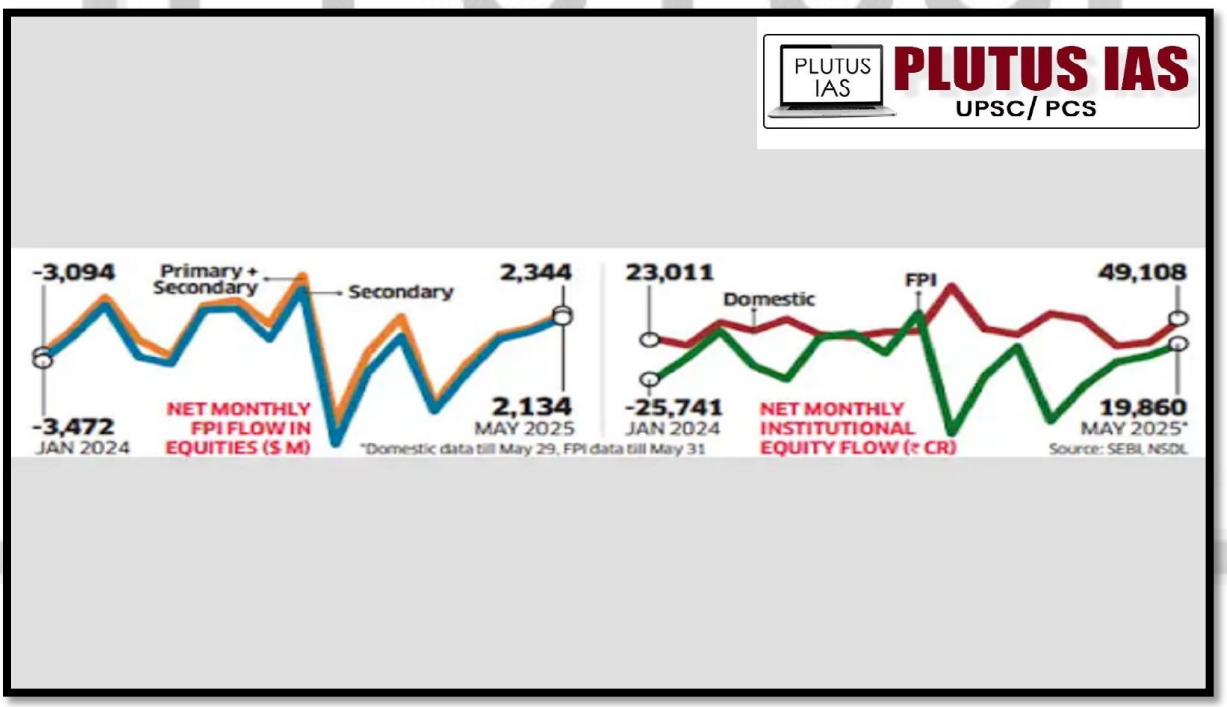

- ईटी इंटेलिजेंस ग्रुप के द्वारा जारी किए गए एक रिपोर्ट के मुताबिक, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) साल 2025 में भारतीय प्राथमिक बाज़ार (IPO) में अपना निवेश काफी सोच-समझकर कर रहे हैं।

- वर्ष 2025 की शुरुआत से मई 2025 तक एफपीआई ने केवल 1.8 बिलियन डॉलर (₹15,864 करोड़) का निवेश किया है, जबकि 2024 की इसी अवधि में यह आंकड़ा 4 बिलियन डॉलर (₹33,487 करोड़) था।
- विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक द्वारा भारतीय प्राथमिक बाज़ार (IPO) में किये गए निवेश का यह गिरावट 55% से अधिक की है, जो बाजार में उनकी सतर्कता और निवेश के प्रति बदलते रुझान को दर्शाती है।

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक द्वारा भारतीय बाजार में निवेश करने में सावधानी बरतने का प्रमुख कारण :

1. **उच्च बाजार अस्थिरता :** वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव और व्यापक आर्थिक अस्थिरता ने अस्थिरता को बढ़ा दिया है, जिससे जोखिम लेने में बाधा उत्पन्न हुई है।
2. **ब्याज दर अनिश्चितता:** अमेरिका और यूरोप में ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव के कारण भारत जैसे उभरते बाजार कम आकर्षक हो गए हैं।
3. **वैश्विक जोखिम-मुक्त भावना:** अनिश्चित वैश्विक संकेतों के बीच निवेशक इक्विटी और आईपीओ से दूर होकर सुरक्षित परिसंपत्तियों की ओर जा रहे हैं।
4. **धीमी आईपीओ गतिविधि:** मंदी के कारण कम आईपीओ लॉन्च हो रहे हैं, जिससे एफपीआई के अवसर कम हो रहे हैं।
5. **खुदरा भागीदारी में कमी:**घरेलू खुदरा निवेशक सतर्क हो गए हैं, जिससे आईपीओ की सदस्यता शक्ति और गति प्रभावित हो रही है।
6. **आईपीओ का अधिक मूल्यांकन:**जारीकर्ताओं द्वारा आक्रामक मूल्य निर्धारण, विशेष रूप से स्टार्टअप क्षेत्र में, मूल्यांकन संबंधी चिंताओं को जन्म दिया है।
7. **लिस्टिंग के बाद खराब प्रदर्शन:** 2024 के कई आईपीओ ने लिस्टिंग के बाद खराब प्रदर्शन किया, जिससे दोबारा एफपीआई निवेश में कमी आई।
8. **मुद्रा जोखिम:** रुपये के अवमूल्यन की आशंका से डॉलर के संदर्भ में रिटर्न कम हो जाता है और एफपीआई के लिए प्रत्यावर्तन जोखिम बढ़ जाता है।

तुलनात्मक रुझान :

1. **2024 आईपीओ बूम :** तरलता, तकनीक प्रचार और निवेशक आशावाद से प्रेरित होकर रिकॉर्ड धन उगाही और भारी ओवरसब्सक्रिप्शन हुआ।
2. **प्रौद्योगिकी क्षेत्र में उत्साह :** डिजिटल अर्थव्यवस्था और फिनटेक स्टार्टअप में उच्च रुचि ने 2024 में एफपीआई निवेश को बढ़ावा दिया।
3. **2025 युक्तिकरण :** बाजार की धारणा सतर्क हो गई है, तथा अब मात्रा से गुणवत्ता पर जोर दिया जा रहा है।

4. **लाभ बुकिंग की प्रवृत्ति :** एफपीआई अब आईपीओ में नए सिरे से निवेश करने के बजाय पहले के निवेश से मुनाफा कमा रहे हैं।
5. **चयनात्मक भागीदारी :** अब ध्यान मजबूत बुनियादी ढांचे वाली बड़ी, स्थिर कंपनियों पर केंद्रित हो गया है।
6. **छोटी आईपीओ पाइप लाइन :** बाजार की स्थितियों और कमजोर निवेशक मांग के कारण 2025 में कम कंपनियां सूचीबद्ध होंगी।
7. **निवेशकों की बदलती प्राथमिकताएं :** वैश्विक आर्थिक मंदी और ब्याज दरों में वृद्धि के कारण विकास से सुरक्षा की ओर बदलाव।
8. **परिश्रम में वृद्धि :** एफपीआई निवेश से पहले अधिक पारदर्शिता और मजबूत बिजनेस मॉडल की मांग कर रहे हैं।

भारतीय पूंजी बाजार पर प्रभाव :

1. **आईपीओ की कम मांग :** एफपीआई की रुचि कम होने से आईपीओ में कम अभिदान या उत्साह में कमी आती है।
2. **पूंजी जुटाने की चुनौतियाँ :** स्टार्टअप और मिड-कैप कंपनियों को इक्विटी पूंजी जुटाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
3. **कम मूल्यांकन :** मांग में कमी के कारण कंपनियां आईपीओ की कीमत कम करने को बाध्य हो सकती हैं, जिससे मूल्यांकन प्रभावित हो सकता है।
4. **निवेशक आधार में बदलाव :** घरेलू संस्थागत निवेशक (डीआईआई) अधिक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहे हैं।
5. **जारीकर्ता की रणनीतियों में बदलाव :** कंपनियां वित्तपोषण की उपलब्धता के आधार पर आईपीओ योजना में देरी या परिवर्तन कर सकती हैं।
6. **नवाचार पर प्रभाव :** धीमी वित्तपोषण से प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में नवाचार और विस्तार प्रभावित हो सकता है।
7. **अल्पकालिक बाजार सुधार :** एफपीआई की निकासी से अस्थिरता बढ़ सकती है और इक्विटी सूचकांकों में अल्पकालिक सुधार हो सकता है।
8. **वैश्विक विश्वास में कमी :** लगातार कम भागीदारी को वैश्विक निवेशक विश्वास में कमी के संकेत के रूप में देखा जा सकता है।

व्यापक संदर्भ :

1. **वैश्विक अनिश्चितता :** आर्थिक मंदी, आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान और भू-राजनीतिक संकटों ने वैश्विक स्तर पर पूंजी प्रवाह को प्रभावित किया है।

2. **उभरते बाजार पर प्रभाव :** भारत ही नहीं, बल्कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भी एफपीआई का ऐसा ही सतर्क व्यवहार देखा गया।
3. **अमेरिकी फेड नीति प्रभाव :** अमेरिकी फेडरल रिजर्व से प्राप्त आक्रामक संकेत वैश्विक निवेश भावना और एफपीआई रणनीति को प्रभावित करते हैं।
4. **मुद्रास्फीति दबाव :** वैश्विक मुद्रास्फीति केंद्रीय बैंकों को सतर्क बनाती है, जिसके परिणामस्वरूप जोखिमपूर्ण बाजारों से पूंजी का बहिर्गमन होता है।
5. **भारत की वृहद स्थिरता :** वैश्विक अनिश्चितता के बावजूद भारत की विकास दर मजबूत बनी हुई है और मुद्रास्फीति नियंत्रण में है।
6. **चालू खाता घाटा :** बढ़ते चालू खाते के घाटे और बाहरी कमजोरियों की चिंता निवेशकों के निर्णयों पर भारी पड़ती है।
7. **तेल एवं कमोडिटी की कीमतें :** वैश्विक वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव भारत के व्यापार संतुलन और निवेशक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।
8. **भू-राजनीतिक पुनर्संरेखण :** वर्तमान वैश्विक संघर्ष और प्रतिबंध व्यवस्थाएं दीर्घकालिक एफपीआई रणनीति और परिसंपत्ति आवंटन को प्रभावित करती हैं।

समाधान / आगे की राह :

1. **मूल्य निर्धारण पारदर्शिता को बढ़ावा दें :** नियामकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भविष्य में लिस्टिंग घाटे से बचने के लिए आईपीओ की उचित कीमत हो।
2. **प्रकटीकरण मानकों में सुधार :** प्री-आईपीओ प्रकटीकरण को मजबूत करने से निवेशकों का विश्वास बनाने में मदद मिलेगी।
3. **कॉर्पोरेट प्रशासन को बढ़ावा दें :** उच्च शासन मानक दीर्घकालिक निवेशकों को आकर्षित करते हैं और जोखिम की धारणा को कम करते हैं।
4. **निवेशक शिक्षा को मजबूत करें :** खुदरा निवेशकों और विश्लेषकों को शिक्षित करने से समग्र बाजार की गहराई में सुधार होता है।
5. **नीति स्थिरता :** एक पूर्वानुमानित कर और नियामक व्यवस्था लगातार एफपीआई प्रवाह को प्रोत्साहित करती है।
6. **अनुपालन मानदंडों को आसान बनाना :** प्रक्रियात्मक बाधाओं को सुव्यवस्थित करने से विदेशी निवेशकों के लिए व्यापार करने में आसानी होगी।
7. **गुणवत्ता लिस्टिंग को प्रोत्साहित करें :** मौलिक रूप से मजबूत कंपनियों को सार्वजनिक होने के लिए प्रोत्साहित करना स्थायी बाजार विकास का निर्माण करता है।
8. **मैक्रो स्थिरता बनाए रखें :** निरंतर आर्थिक सुधार, राजकोषीय अनुशासन और स्थिर मुद्रास्फीति भारत की एफपीआई अपील को बढ़ाएगी।

निष्कर्ष :

- वर्ष 2025 के दौरान भारत के IPO बाजार में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (FPI) की भागीदारी में तेज गिरावट वैश्विक अस्थिरता, नीति अनिश्चितता और मूल्यांकन संबंधी चिंताओं के बीच निवेशकों की बढ़ती सावधानी को दर्शाती है। जबकि 2024 का उत्साह तरलता और तकनीक के प्रति आशावाद से प्रेरित था, वर्तमान परिवेश में चयनात्मक, गुणवत्ता-केंद्रित निवेश की विशेषता है। यह बदलाव भारत के पूंजी बाजारों के लिए चुनौतियां और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। FPI का विश्वास बहाल करने और दीर्घकालिक निवेश गंतव्य के रूप में भारत के आकर्षण को बनाए रखने के लिए, नीति निर्माताओं, नियामकों और बाजार सहभागियों को पारदर्शी, शासन और नीति की भविष्यवाणी को प्राथमिकता देनी चाहिए। अपने मजबूत मैक्रोइकोनॉमिक फंडामेंटल और सुधार की गति के साथ, भारत आने वाले वर्षों में वैश्विक चुनौतियों का सामना करने और स्थायी विदेशी पूंजी आकर्षित करने के लिए अच्छी स्थिति में है।

स्त्रोत - पी. आई. बी. एवं इंडियन एक्सप्रेस।

प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न :

Q.1. विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) और 2025 में भारत के पूंजी बाजार में उनकी भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एफपीआई ने 2024 की तुलना में 2025 में भारतीय आईपीओ में अपना निवेश बढ़ाया है।
2. बाजार में अत्यधिक अस्थिरता और रुपए के मूल्यह्रास के जोखिम के कारण एफपीआई की भागीदारी सतर्क हो गई है।
3. एफपीआई मजबूत बुनियादी बातों और मजबूत कॉर्पोरेट प्रशासन वाली कंपनियों में निवेश करना पसंद करते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर - (b)

मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न :

Q.1. चर्चा कीजिए कि वर्ष 2025 में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) द्वारा भारत के आईपीओ बाजार के प्रति दिखाई गई बढ़ती सतर्कता, जो 2024 के उत्साह से विपरीत है, इसके पीछे कौन से

प्रमुख कारण जिम्मेदार हैं? इस बदलाव का भारत के पूंजी बाजारों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, और एफपीआई की निरंतर रुचि को पुनर्जीवित करने के लिए कौन से नीतिगत उपाय अपनाए जा सकते हैं? (शब्द सीमा - 250 अंक - 15)